Research Paper Music

ग़ज़लकृ आधुनिक भारतीय संगीत की एक नई दिषा

Ghazal Aadhunik Bharatiya Sangit Ki Ek Disha

* Dr. Rohit

* Assistant Professor, Music Department, Lovely Professional University, Jalandhar, Punjab

Keywords :

भारतीय संस्कृति देशी तथा विदेशी ताने–बाने से निर्मित बहुरंगी वस्त्रा हैं। भारत की सहत्रादल संस्कृति के सृजन में न जाने कितने अनगिनत तत्वों ने योगदान दिया है। इसी में भारतीय संस्कृति के चैतन्य एवं सनातन स्वरूप का रहस्य निहित है। भारतीय संगीत का इतिहास ऐसी ही समन्वयकारी प्रवृतियों की विराट चेश्टा है। भारतीय इतिहास के मध्यकाल से संगीत की प्रत्येक विद्या चाहे वह गीत हो, वाद्य हो अथवा नृत्य, हिन्द. –मुस्लिम सामजस्य की प्रतीक है। भारतीय संगीत में ग़ज़ल का प्रवेष इन्हीं परिस्थितियों में हुआ है।

इतिहास बतलाता है कि ग़ज़ल एक अरेबिक षब्द है। पर्षियन भाशा में गज़ल का अर्थ है ''सुखन अज़ ज़नाना गुफ़्तनें'' अर्थात औरतों से औरतों के बारे में बातचीत करने का तरीका अथवा माध्यम। इसका अर्थ यह हुआ कि ग़ज़ल प्यार मुहब्बत की बोली है अर्थात ग़ज़ल मुहब्बत के जज्बात को व्यक्त करना है। आषिक माषूक उनका प्यार तथा प्यार में उभरने वाली तमाम छटाओं का वर्णन ग़ज़ल में होता है। हम बेझिझक यह कह सकते हैं कि गज़ल की रूह अथवा आत्मा प्यार है मुहब्बत है, प्रणय है। प्रारंभिक गज़लें अक्सर इसी विशय पर लिखी जाती थी।

भारत में ग़ज़ल के प्रवर्तन का श्रेय 9 वी षताब्दी के प्रसि(सूफी संत ख्वाज़ा मुईनुद्दीन चिष्ती को दिया जाता है। उन्होंने स्वंय फारसी और हिन्दी में अनेक ग़ज़लें लिखी हैं। तत्कालीन राज–दरबारों में कव्वाली, ग़ज़ल–जैसे फारसी गीतों को प्रश्रय प्राप्त था, क्योंकि षासकों की विलासिता और श्रृंगारप्रियता के लिए वे अनुकूल थे। इस युग के सबसे प्रसि(इतिहासकार बर्नी के अनुसार, खिलजी सुल्तानों के दरबार में ईरानी कलाकारों को सम्मान का स्थान प्राप्त था। मुहम्मद बिन, सिक्का ईसूनसिया तथा मुहम्मद मुकरी उस समय के प्रसि(ग़ज़ल गायक थे। ग़ज़ल को प्रतिश्ठित करने में खिलजी और तुगलक साम्राज्य के राजकवि अमीर खुसरो का महत्वपूर्ण योगदान रहा। वे राजकवि होने के साथ अच्छे ग़ज़ल गायक थे। फारसी और भारतीय, दोनों संगीत षैलियों से उनका पर्याप्त परिचय था। मिश्र, अरब तथा ईरान के पंरपरागत संस्कारों के साथ, भारत में पैदा होने के कारण, भारतीय संस्कृति के सहज संस्कार भी उनमें थे। फ़ारसी राग, ताल, वाद्य तथा छन्दों के आधर पर भारतीय संगीत में उन्होंने नया मोड़ प्रस्तुत किया। उनकी यह परम्परा खुसरो–सम्प्रदाय के नाम से प्रचलित हुई।

मुगल काल संगीत व अन्य ललित कलाओं का अगस्टन युग माना गया है। अकबर संगीत और षायरी का बहुत रसिक था। उसके राज्यकाल में ग़ज़ल और कव्वाली को पहले से अधिक प्रोत्साहन मिला। फैजी, मुहम्मद हुसैन नज़ीरी और षेख सादी उस समय के प्रसि(षायर थे। षाहजहाँ के काल में नासिर अफ़जली और पंडित चंद्रभान जैसे उर्दू–ग़ज़लों के प्रसि(षायर हुए। गोलकुंडा का सुलतान मुहम्मदअली कुतुबषाह स्वंय उर्दू का प्रसि(लेखक व कवि था। हालांकि औरंगजेब के युग से संगीत पर 'कर्फयू' लगा। यही नहीं उसने अपनी राजसभा से समस्त कलाकारों को निकाल दिया था। अन्य कलाकारों के साथ ग़ज़ल–गायक भी प्रान्तीय नरेषों तथा नवाबों की षरण में चले गए थे।

गज़ल की रचना प्रारंभ में मुसलमान कवियों द्वारा की गई थी और अब भी की जा रही है। हालांकि आज की परिस्थितियां पूर्व की परिस्थितियों से भिन्न हो गई हैं। आज देष स्वतंत्रा है और अब उर्दू भाशा की संख्या में भी कमी आ गई है। आज राश्ट्र भाशा हिन्दी है और इसके बोलने वालों की संख्या भी अन्य भाशाओं से अध्कि है। 'प्रारंभ में ग़ज़ल की भाशा फारसी, उर्दू और हिन्दी–उर्दू–मिश्रित–इन तीनों प्रकार की भाशा थी, जिसमें भारतीयता का पुट था।' आज कल उर्दू और हिन्दी–उर्दू, इन दोनों प्रकार की भाशाओं में ग़जलें पाई जाती हैं।

गज़ल में षायरी का अपना ही एक ढंग रहता है। इसकी रचना विविध् छन्दों में होती है, जो संस्कृत के चामर, राध्का, तोटक, गीतिक आदि छन्दों से कुछ मिलते–जुलते हैं इसके अनेक चरण होते हैं। दो चरणों का एक खंड 'षेर' कहलाता है। ग़ज़ल में कम से कम 2 तथा अध्कि से अध्कि 18 षेर होते हैं, परन्तु इस सम्बन्ध में कोई कड़ा नियम नहीं है। षेर के दो सम चरण 'मिसरा' कहलाते हैं और षेर के अंत में जिन षब्दों की पुनरावृत्ति होती है, उन्हें 'रदीफ' कहते हैं, जो यमक से मिलता जुलता है।

ग़ज़ल का पहला षेर 'स्थायी' होता है और षेश अंतरा होते हैं। सभी अंतरे प्रायः एक ही तर्ज में गाए जाते हैं। ठेके का प्रारम्भ प्रायः दूसरे षेर से अथवा पहले षेर के अंतिम चरणार्ध से किया जाता है। अध्किांषतः ग़ज़लें कहरवा, दादरा तथा रूपक तालों में गाई जाती हैं। कहीं–कहीं घुमाली ताल में भी ग़ज़ल गाने की प्रथा है, किन्तु उसमें घुमाली एवं कहरवा ताल का अन्तर अस्पश्ट ही दृश्टिगोचर होता है। जिस प्रकार हिन्दी कविताओं में छंद होते हैं उसी प्रकार उर्दू–षायरी 'बहर' के वज़न पर आधरित होती है। इस संबंध में सबसे पहले अमीर खुसरो ने 'एज़ाज खुसखी' नाम की पुस्तक तीन भागों में लिखी उसके बाद इसी के आधर पर अनेक पुस्तकें लिखी गई। उर्दू में मूल बहरें उन्नीस हैं, जिनमें से बारह बहरें लोकप्रिय और प्रचलित हैं।

गज़ल षायरी के समान इसकी गायकी भी अपनी विषेशता रखती है। डॉ. देवराज ने गज़ल को षास्त्रीय संगीत का एक अंग माना है उनका मत है कि बहुषाकृ ग़ज़ल उन्हीं रागों में गाई जाती हैं, जिनमें टप्पा और ठुमरी गाए जाते हैं। चन्द्र कौंस, भैरवी, मॉड, पहाड़ी, भीमपलासी आदि रागों में ग़ज़लें पाई जाती हैं। परन्तु ग़ज़ल के लिए राम नियम अनिवार्य नहीं है गज़ल का अपना निराला ही ढ़ंग होता है। स्वर रचना में गीत की भावानुकूलता का ही मुख्यतः ध्यान रखा जाता है। यह अध्कितर पष्तो, रूपक, दादरा, कहरवा आदि तालों में गाई जाती है। ठुमरी के समान यह भी अति लोकप्रिय षैली है। गज़ल में ध्ुन की मार्मिकता की ओर जहां ध्यान दिया जाता है, वहां उसका षब्दोंच्चार भी सही और स्पश्ट होना नितान्त आवष्यक समझा जाता है। इसमें जितनी मनोहर षब्द–. रचना पाई जाती है, उतनी ही गंभीर एवं उदात्त कल्पना भी। काव्य और संगीत, दोनों को लेकर यह प्रकार श्रोताओं के हृदय–पटल पर दुहरी मार करता है। जहां तक संगीत का सम्बन्ध है, इस षैली की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

गज़ल मुख्यतः श्रृंगार रस–परख गीत है। बाद में चलकर इसमें वीर करूण रस–परक गीतों की रचनाएं होने लगी। इसकी षब्द रचना अत्यन्त मध्ुर होती है और विशय के किसी मार्मिक प्रसंग को चुनकर गीत लिखे जाते हैं। इसमें षब्द रचना की प्रधनता रहती है और राग, ताल, प्रायकृ गौण हुआ करते हैं। इसकी गायन प्रकृति क्षुद्र है। विषेशकर दीपचंदी और पष्तो ताल इसकी प्रकृति के उपयुक्त हैं। इसकी गायन–प(ति अत्यन्त सरल होती है। गाने के बीच बीच में थोड़ा सा आलाप, तान और स्वर–विस्तार के साथ इसकी समाप्ति बड़ी अच्छी लगती है। ग़ज़ल विषेशकर मध्य लय में बड़ी सुन्दर प्रतीत होती है।

गज़ल गाने का उत्तर भारत में विषेश प्रचार है। डा. देवराज अपनी पुस्तक 'साहित्य–ि चंता' में लिखते हैं :– उर्दू का ग़ज़ल काव्य विषेश चमत्कारपूर्ण होता है, इसका प्रमाण उर्दू–मुषायरों की सफलता है। उर्दू का एक षेर श्रोताओं को जितना चमत्कृत कर सकता है उतना षायद किसी दूसरी भाशा का द्विपद नहीं। और जितने चमत्कारी द्विपद उर्दू काव्य में मिल सकेंगे उतने अन्य किसी भाशा में नहीं।' सौदा, ज़ौक़, मीर, गालिब आदि उर्दू के लब्धप्रतिश्ठ ग़ज़ल–रचयिता हुए हैं। गालिब की ग़ज़लें चमत्कार प्रधन तथा मीर की ग़ज़लें गम्भीरता प्रधन मानी जाती हैं।

तुम उनके वादे का जिक्र उनसे क्यों करो गालिब,

यह क्या की तुम कहो और वह कहें कि याद नहीं– गालिब।

सिरहाने मीर के अहिस्ता बोलो, अभी टुक रोते–रोते सो गया है–मीर।

ग़ज़ल की इन्हीं विषेशताओं के कारण ही ''स्ट्रीट सिंगर'' भी अपने गाने से लोगों को आकर्शित कर लेता है। फिल्म में भी अध्कितर ग़ज़लों का इसीलिए प्रयोग किया जा रहा है। कुछ प्रसि(गायकों की ग़ज़लों ने तो लोकप्रियता की चरम सीमा को छू लिया, जिनमें अख्तरी बाई, फैज़ावादी की दीवाना बनाना है तो दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दें, आगाह, फैज़ की, 'जो दिल में खो चुका है, वो दिल में ढूंढता है। तथा स्वः सहगल की गाई हुई मिर्जा गालिब की ग़ज़ल ''दुनिया में हूँ, दुनिया का तलवगार नहीं हूँ'' सर्वविदित है। इन गायकों के अतिरिक्त सुन्दराबाई, कमला झारिया, मलिका पुखराज, मा. मदन, तलत महमूद, लता मंगेष्कर आदि कुषल गायकों द्वारा संगीत के इस महत्वपूर्ण अंग पर्याप्त सेवा हो रही है। फिल्म जगत के संगीत निर्देषकों का जहाँ गीत और भजन की उन्नति में सहयोग रहा है वहां गज़ल का अंग पुश्ट बनाने में भी उनका प्रयत्न सराहनीय कहा जा सकता है।

गायकी के क्षेत्रा में गज़ल हेय नहीं है। षेरों के भावों के अनुसार रागों में और रागों को

मिश्रणों में बांधे गई गज़लें अपना सानी नहीं रखती। बड़ी–बड़ी तानें, गमकों

संगीत के प्रकारों में जब भिन्न–भिन्न संगीत प्रकारों का स्मरण किया जाता है, तो उसमें 'ग़ज़ल' भी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। षास्त्रीय संगीत जगत गज़ल को एक हल्के संगीत के रूप में स्वीकार करता है, किन्तु यदि न्यायपूर्वक विचार किया जाए तो गज़ल अपने आपमें सर्वांगपूर्ण दृश्टिगोचर होगी। गज़ल का सबसे सराहनीय गुण यह है कि यह जन मानस पर अति षीघ्र अपना अधिकार जमाती है। गज़ल के गायन में कई विषेशताएं एक साथ संघटित होती हैं। उच्च कोटि के शायरों द्वारा सुन्दर भावपूर्ण षब्दों के चुनाव, सुरीले गायकों द्वारा उन षब्दों के अनुसार भावाभिव्यक्ति करते हुए स्वरों के लगाव तथा अनुप्रासिक सन्तुलनों के साथ–साथ एक साथ कई व्यक्तियों के गाायन से गज़ल सजीव हो जाती है। गज़ल एक ऐसा गायन का प्रकार है, जिसे गाने के लिए छोटे से छोटे तथा बड़े से बड़े सभी प्रकार के गायक लालायित रहते हैं। गज़ल को ''आध ुनिक गीत प्रकार'' कहकर भले ही सम्बोधित किया जाए, यह निसंदेह सर्वसाधरण का एक मनचाहा गायन है। और आज यह हमारी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बन चुका है।

REFERENCES

1 भारतीय संगीत का इतिहास ले॰ उमेष जोषी | 2 उत्तर–भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास, ले॰ विश्णुनारायष भातखंडे | 3 हिन्दी गज़ल गज़लकारों की नज़र में, सरदार मुजावर, वाषी प्रकाषन–2001 | 4 हिन्दी गज़ल की भाशिक सरंचना, डॉ॰ सरदार मुजावर, वाषी प्रकाषन–2010 | 5 हिन्दी ग़ज़ल की नई दिषाएँ, सरदार मुजावर, राजकमल प्रकाषन दिल्ली | 6 हिन्दी ग़ज़ल दषा और दिषा, डॉ॰ नरेष, वाषी प्रकाषन–2004 | 7 हिन्दी ग़ज़ल : उदभव ओर विकास, रोहिताष्व अस्थाना, 2010 |